National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multidisciplinaryjournal.org
ISSN: 2455-9040
Received: 13-10-2023, Accepted: 28-10-2023, Published: 14-11-2023
Volume 8, Issue 2, 2023, Page No. 181-184

राजेन्द्र यादव और मोहन राकेश के उपन्यासों में सामाजिक चेतना

अनुपम कुमारी
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

सांराश
साहित्य का केन्द्र समाज होता है और समाज का केन्द्र मानव होता है। हिन्दी गद्य साहित्य की विविध विधाओं में उपन्यास सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है, जिसमें मानव और उसके जीवन के विभिन्न पक्षों का चित्रण होता है। परिवर्त्तनशील मानव जीवन में उपन्यास काफी प्रभावशाली रहा है। स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों में सामाजिक चेतना की वैविध्यपूर्ण अभिव्यक्ति हुई है।
उपन्यासकारों ने मानव मन को टटोलते हुए,एक–एक परत को सुक्ष्म रूप से देखने की कोशिश की है और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जिन उपन्यासकारों या कथाकारों का विशेष नाम है– उनमें से राजेन्द्र यादव और मोहन राकेश प्रमुख है। इन्होंने समाज को नयी दृष्टि से देखा है। शिल्प की दृष्टि से उनके प्रयोग किए है। राजेन्द्र यादव और मोहन राकेश समाज के प्रति बड़े जागरूक थे। यादव जी और राकेश जी ने उन परिस्थितियों और विश्वासों पर प्रहार किया है जो पुरानी लकीर को खींचने के फेर में जीवन यथार्थ का सामना करने में असमर्थ है।
संसार परिवर्तनशील है तथा स्थिरता जड़ता का चिन्ह है। प्रत्येक युग के अपने मूल्य होते हैं, युग बदलने के साथ ही ये मूल्य भी बदल जाते है और उनके स्थान पर समाज में नवीन चेतना आती हैं।

मूल शब्दः सामाजिक चेतना, द्वन्द, महत्वाकांक्षा, समता और विषमता का यथार्थ

प्रस्तावना
राजेन्द्र यादव और मोहन राकेश दोनों स्वातंत्रोत्तर हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण साहित्यकारों में से आते है। इन दोनों के उपन्यासों में आजादी के बाद देश में तेजी से हुए सामाजिक और आर्थिक बदलावों की तस्वीर दिखलायी पड़ती है, ये तस्वीर उभरती है शहरी जिंदगी के बढ़ते तनावों और उनमें पिसते दिखलायी पड़ते है मध्यमवर्गीय किरदार। ये किरदार अपनी–अपनी जिंदगियों में पुराने और नए के बीच जारी संघर्ष के गवाह भी है और शिकार भी। यादव जी और राकेश जी अपने इन किरदारों की जिंदगी और आंतरिक तनाव की तहों को हालात के आईने में रखकर जिस तरह परत–दर–परत खोलते है, वह उनकी बारीक और गहरी अंतर्दृष्टि का सबूत है।
अर्थात् ''शीशे की दीवार के इधर–उधर चलती दुहरी जिंदगियों के बीच एक गवाक्ष एक झरोखा है'' 'जहाँ से पूरा एक युग गुजर रहा है। संस्कार और वर्ग की दीवारों की दरार टटोलने की बेचैनी गुजर रही है''[1]
राजेन्द्र यादव और मोहन राकेश हिन्दी के बहुचर्चित, सशक्त और समर्थ–साहित्यकार रहे है। इन्होंने मानव मन की परतों को सुक्ष्मता से खोलते है। उसके भीतर झाँकते है। उसमें बाहरी दबावों और प्रतिक्रियाओं की छाया देखते है और मध्यमवर्गीय जीवन की असन्तोष, निराशा, कुंठा, विसंगतियों का यथार्थ को अंकन करते है। जब कि मोहन राकेश ने अपने उपन्यासों में आधुनिक संदर्भ में पुरुष–स्त्री के सम्बन्धों उसकी जटिलताओं, विसंगतियों, तनावों, द्वन्दों, व्यक्ति मन की छटपटाहट प्रश्न बेचैनी आदि की प्रधानता है। इस तरह यहाँ अंतर्विरोधों का बड़ा ही सजीव चित्रण किया गया है। ''उपन्यास यथार्थ मानव अनुभवों एवं सत्य का आकलन है। उसकी रचना से समाज में प्रचलित सत्य की अनुभूति धनीभूत होकर उठती है।''[2]
मानव जीवन का समग्रता एवं यथार्थ परिवेश ही उपन्यासों में चित्रित होते है। हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में सामाजिक उपन्यासकार के रूप में 'प्रेमचंद का महत्त्व प्रकाश स्तम्भ जैसा है। भारतीय समाज में इस युग को अन्धानुकरण वृत्ति की समाप्ति और जागृति का युग मानना है। उन्होंने घटना की प्रधानता और काल्पनिकता से इसे मुक्त कर मनोरंजन मात्र के स्तर उपर उठाकर उसे सौदेश्य बनाया। साहित्य समाज का दर्पण होता है, तो साहित्य समाज से ही प्रेरणा भी ग्रहण करता है।
देश में स्वतंत्रता के उपरान्त फैली हुई विषम परिस्थितियों में देश के संवेदनशील और भविष्य के सुनहरे सपने देखने वाले उपन्यासकारों की जो पीढ़ी उभरी वह क्षोभ आक्रोश से भरी हुई थी। उनके सारे सपने चूर–चूर हो चूके थे। मंहगाई, बेरोजगारी भ्रष्टाचार, अन्याय, शोषण, सामाजिक रूढ़ियाँ आदि के नीचे सामान्य जनता पिसती जा रही थी। परन्तु, सामाजिक चेतना सभी को जागृत करती है।

सामाजिक चेतना की परिभाषा
''सामाजिक चेतना वह अपरिभाषेय वस्तु है जो अपने से अलग–अलग पदार्थो का ज्ञान अथवा संवेदना प्राप्त कर सके। सामान्य तौर पर सामाजिक चेतना का तात्पर्य जागरण, विकास एवं सामाजिक उन्नति की भावना से है।''[3]

सामाजिक चेतना
मानव सामाजिक प्राणी है। चेतना उसमें जन्मजात है नए–नए अनुभवों और अनुभूतियों के सहारे उसकी चेतना विकसित होती है, व्यापक होती है। चेतना का धर्म जागरण है जैसे– वह व्यक्ति को जागृत करती है, वैसे ही समाज को भी जागृत करने की क्षमता रखती है। यह चेतना मनुष्य की आत्मिक शक्ति से जुड़ी हुई है। समाज में शोषण, संघर्ष आर्थिक, विषमताएँ ऊँच–नीच की भावना, वैवाहिक समस्याएँ आदि सामाजिक वैषम्य होते है, तब 'सामाजिक चेतना' का उदय होता है।– ''हरेक सामाजिक अपनी अन्तर चेतना से अदभूत प्रेरणा के कारण ही व्यक्तिगत तथा सामाजिक प्रतिष्ठा मूलक कार्य सम्पादित करता है।''[4]
सामाजिक चेतना ही मनुष्य को जीवित रखती है। इससे निर्मित चरित्र के बल पर संगठन के दृढ़ बनाती है। संगठन के द्वारा ही समाज की वास्तविकता व्यक्त होती है।
इस प्रकार, मानवता विरोधी स्थितियों में भी साहित्यकार की सामाजिक चेतना अधिक प्रखर बन जाती है। साहित्य सर्जना के

मुख्य रूप में सामाजिक चेतना उसे झकझोरती है, उद्विग्न करती है, उसे द्वन्दग्रस्त करती है, उसे अन्वेषक बनाती है, उसे चिंतनशील बनाती है, और फिर वही चेतना सर्जना की ताकत बन जाती है।

राजेन्द्र यादव और मोहन राकेश ने प्रेमचन्दयुगीन समस्याओं को नये युग के भाव पक्ष वलय एवं सामाजिक संस्कृति से उत्पन्न सभ्यता के बीच, नये संदर्भ में रखकर, उन्हीं को नया स्वरूप दिया है, इस रूपायन के कारण ही वो समस्याएँ सर्वथा नवीन–सी लगती है, जिसमें समस्या की गम्भीरता अस्पष्ट है किन्तु गहराई अवश्य है। स्वयं प्रेमचन्द जी के शब्दों में– ''मेरा जीवन सपाट समतल मैदान हैं, जिसमें कहीं तो गड्ढे है, पर टीले, घने जंगलों, पर्वतों गहरी घाटियों और खड्ढ़ो का स्थान नहीं है। जो सज्जन पहाड़ों की सैर के शौकीन है, उन्हे तो यहाँ निराशा ही मिलेगी।''[5]

राजेन्द्र यादव का 'सारा आकाश उपन्यासों में मध्यमवर्गीय परिवारों की आन्तरिक कलहों और युवा पीढ़ी को मुल्यहीन जीवन की कहानी है। जिसमें यह बात साफ–साफ दिखलाई पड़ती है कि समर को अपने जीवन साथी के चयन एवं इच्छा पूर्वक जीवन जीने का अधिकार नहीं दिया जा रहा है। 'सारा आकाश' उपन्यास का नायक समर को अपना जीवन नीरस तथा भविष्य के सपने टूटते नजर आते है। समर कहता है– ''मेरी वे सारी महत्वाकाक्षाएँ कुछ बनकर दिखलाने के सपने अब यों ही घुट–घुट कर मर जायेंगे। रात–रात भर की नींद और खून देकर पाले हुए वे सारे भविष्य के सपने अब दम तोड़ देंगें।''[6] उक्त पंक्ति प्रमुखतः निम्न मध्यमवर्गीय युवक के अस्तित्व के संघर्ष को दिखाया है। आजादी के पश्चात् मध्य–निम्नमध्य वर्ग के युवक अपनी आशाओं, महत्वाकाक्षाओं और आर्थिक सामाजिक संस्कारों मूल्यों, मान्यताओं से लड़ रहे थे। वही 'उजड़े हुए लोग' उपन्यास में भारत के प्रथम चुनाव के पहले पृष्ठभूमि को दर्शाया है। इसमें पूँजीवादी अर्थ व्यवस्था के आगे, रुढ़ियों के मोटे जाल को तोड़ने निकलने, शरद और जया के टूटने की कहानी है। यह राष्ट्रीय नेतृत्व के खोखलेपन एवं युवा पीढ़ी की दिशाहीन स्थिति का उपन्यास है। जिसमें शरद एवं जया बगैर विवाह किए साथ–साथ रहने का निश्चय करते है जो छठवें दशक में अवचेतन के स्तर पर युवा पीढ़ी का क्रांतिकारी एवं अग्रगामी कदम माना जा सकता है।

'कुलटा' उपन्यास में मानव की संकुचित वृत्ति के प्रति अपना विद्रोह प्रकट किया है। साथ ही अनमेल विवाह की भीषण स्थिति की ओर ध्यान केन्द्रित किया है। 'कुलटा' उपन्यास में मिसेज और तेजपाल के दुःसाहसी चरित्र का वर्णन है जो अपने संवेग, आवेग, यौन अतृप्ति हेतु एक वायलिन वादक के साथ अन्यत्र चली जाती है। यह नारी वर्ग की स्वतंत्र चेतना एवं इच्छित जीवन शैली का प्रतीकात्मक उपन्यास है।

'शह और मात' लेखक के सुहृदय चरित्र की प्रयोगात्मक गाथा है। जिसमें उदय अपनी महिला मित्र सुजाता को कला सृजन का माध्यम बनाते है और वह भी उसे चारा डालकर वंशी फैलाने का कार्य सोचती है। जिसे वह चेतन और अवचेतन स्तर पर महसूस करता है। दृष्टा और भोक्ता का यह द्वन्द निरन्तर उनके अन्दर चलता रहता है। यादवजी ने इसमें उदय और सुजाता में माध्यम से एक लेखक के मानसिक संघर्ष का वास्तविक चित्रण किया है। उपन्यास में वर्त्तमान सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के फलस्वरुप कालाकार उदय के जीवन की व्यथा और उसके खण्डित व्यक्तित्व का रूपांकन किया है। डा0 अर्जुन चव्हाण के अनुसार– ''लेखक और व्यक्ति के द्वन्द्व में उलझे उदय की मानसिक व्यथा को अभिव्यक्त करना उपन्यास का प्रधान उद्देश्य है। सुजाता को भी अपने व्यक्तित्व के दोनो क्षेत्रों मे लेखन और प्रेम में मात खानी पड़ती है। लेखक स्पष्ट इंगित करता है। कि कला की दुनिया में कमजोर आदमी का स्थान नहीं है। कलाकार कमजोर हो तो वह कलाकार रह नही सकता।''[7] 'शह और मात' में लेखक और व्यक्ति के द्वन्द्व में उलझे उदय के मानसिक संघर्ष को अभिव्यक्त करना इस उपन्यास का उद्देश्य है।

'अनदेखे अनजान पुल' में कुरुप निन्नी की करुण गाथा को दर्शाया है। निन्नी काले वर्ण को लेकर लघुताग्रंथि की शिकार है। निन्नी का बचपन में कालेपन के कारण चिढ़ाये जाने पर वह कहती थी– ''काले–काले राम जी के प्यारे–काला तो भगवान जी का रंग है।'' बैजल वाले प्रसंग ने निन्नी को एक नये मार्ग की ओर प्रवृत कर दिया। बैजल ने संध्या के भ्रम में जब निन्नी को अंधेरे में बाहों में कसकर चूमा तो उसे चुंबन की अनुभूति ने उसके अस्तित्व को अनी की तरह चीर सा दिया। यद्यपि चुंबन 'सम्पूर्ण को सौंप देने और संम्पूर्ण को समेट लेने का प्रतीक है।''[8] तथापि यह चुंबन संपूर्ण और समेटने के सुख को न दे पाया लेकिन इस चुंबन ने एक विकृत प्रतिक्रिया अवश्य निन्नी के मन में जगा दी तथा दर्शन का स्नेहिल व्यवहार भी उसमें अहम् और इदम् की भावना विकसित नही पाता है। कुंठा से वह निमोनिया, बुखार एवं बिमारी का शिकार होती है कारण दर्शन के विवाह की सूचना। उपन्यास के अन्त में दर्शन के सहज व्यवहार एवं चुम्बन प्रक्रिया से वह अपनी देह की पूर्णता का अवचेतन संबल पा लेती है।

इनका 'मंत्रविद्ध' उपन्यास विवाहित तारक और छात्रा सुरजीत के प्रेम सम्बन्धों को दिखाया है। दोनों दिल्ली से भागकर मोहन और इन्दु के घर में आश्रय लेता है लेकिन यह युगल समाज में कतई आदर्श नहीं रखता। उनकी पारस्परिकता विषय प्रेम का है और कुछ ऐसी कि अविश्वनीय। बेहद भावुकता और मूर्खतापूर्ण कदम। समाज खौफ कुछ कम होता है इसीलिए विवाहेत्तर सम्बन्धों का अन्तहीन सिलसिला चल रहा है। मोहन भी भावात्मक रूप से पूर्णिमा नामक एक युवती से जुड़ा हुआ है। शायद इसीलिए वह उनकी सहायता करता है। '' इन लोगों को शरण और सहायता देने मे यही भावना तो मेरे अवचेतन मन में नहीं है कि मैं अपनी और पूर्णिमा की ऐसी ही स्थिति की कल्पना करता हूँ।''[9] उसका आत्मान्वेषण इस तथ्य का गवाह है कि रुढ़िवादी रीतियों की जकड़ ढ़ीली हुई है। जनमानस में परिवर्त्तन के प्रति ललक रखते है किन्तु जोखिम से लोग बचना भी चाहते है। मोहन अपने प्रेम को कवच के रूप मे ही सुरजीत और तारक के प्रेम को स्वीकार करते है। महानगरीय जीवन की विषमता और व्यक्तित्व विहीन प्रेम–सम्बन्धों की तीक्ष्णता को तारक के माध्यम से लेखक ने अभिज्ञापित किया है। तारक पूर्णतः एक अवसरवादी, हीन मनोवृत्ति और 'परोपजीवी' पात्र है जो छद्म चेतना का शिकार है।

'उखड़े हुए लोग' उपन्यास का शरद एक संवेदनशील जागरुक और बुद्धिजीवी पात्र है जो युगीन परिवेश तथा समसामयिक समस्याओं पर विचार करने में समर्थ है। शरद के शब्दों में– '' मानव–हृदय या मनुष्य का मनोविज्ञान, वर्ग विषमता और समाज–व्यवस्था का प्रतिबिम्ब जरुर है, लेकिन वह इतना सीधा और जड़ प्रतिफलन है, उसे मैं स्वीकार नहीं करता। कभी–कभी तो मनुष्य भी बौद्धिक चेतना यानी प्रतिरोध की जीवन शक्ति इतनी बलवती होती है कि वह वर्ग के प्रभाव को सीधे उसी रूप में नहीं स्वीकार करती, जैसा दिखाई देता है। वैज्ञानिक शब्दावली में कहे तो वह अपने अनुसार जैनेरेट करती है। यदि ऐसा न हो तो मध्यमवर्ग से आने वाले मार्क्स और उच्चवर्ग से हितैसी सिद्ध करना बड़ा मुश्किल पड़ जायेगा। मैं ऐसा मानता हूँ। अन्तर्विरोधी व्यक्तित्व की यह विसंगतियाँ हम सभी में है और जब तक यह समाज व्यवस्था है तब तक हमारा व्यक्तित्व हमारी जीवन शक्ति इन अन्तर्विरोधों द्वारा तोड़ी जाती रहे–यह अत्यन्त ही स्वभाविक है।''[10]

राजेन्द्र यादव के कतिपय उपन्यासों में कला–सृजन की जिजीविषा और कला चेतना की आन्तरिक पीड़ा का दिग्दर्शन

होता है। 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास का नायक अमर मुख्य पात्र है जिसे सृजनात्मक प्रेरणा देनेवाली पात्र अमला यथार्थवादी पात्र लक्षित न होकर पूर्णतः काल्पनिक पात्र महसूस होती है। लेकिन 'शह और मात' उपन्यास का नायक उदय अन्तर्विरोध प्रवृत्तियों का नायक है जो लेखकीय व्यक्तित्व और मानवीय व्यक्तित्व के द्वन्द्व का सशक्त कथा चरित्र है।''[11]

मोहन राकेश जी ने भले ही कम उपन्यास लिखे हैं। लेकिन उन्होंने भी आज के समाज की बढ़ती समस्याओं को उजागर किया है। आधुनिक भावबोध को स्पष्ट करते हुए भारतीय मध्यमवर्गीय की स्थिति को दिखाया है।

'अंधेरे बंद कमरे' में महत्त्वाकांक्षा के कारण उत्पन्न आज की जिंदगी की कड़वी छटपटाहट है। उपन्यास का हर पात्र अपनी अपनी मंजिल पाने के लिए रास्तों की खोज में व्याकुल दिखाई पड़ता है। प्रमुख पात्र हरबंस और नीलिमा है। हरबंस अपनी पत्नी नीलिमा को लेकर अत्यन्त महत्त्वाकांक्षी बन जाता है। वह उसे कला के क्षेत्र में प्रेरित करता है। जब नीलिमा इस क्षेत्र में आगे बढ़ जाती है वह अपना स्वयं का व्यक्तित्व प्राप्त कर लेती है। तब हरबंस उसकी यह उपलब्धि सह नहीं पाता। इसीलिए दोनों में किसी–न–किसी बात को लेकर द्वन्द्व उत्पन्न होता है और 'अंधेरे बंद कमरे' में महत्त्वाकांक्षा के कारण उत्पन्न आज की जिंदगी की कड़वी छटपटाहट है। उपन्यास का हर पात्र अपनी–अपनी मंजिल पाने के लिए रास्तों की खोज में व्याकुल दिखाई पड़ता है। प्रमुख पात्र हरबंस और नीलिमा है। हरबंस अपनी पत्नी नीलिमा को लेकर अत्यन्त महत्त्वाकांक्षी बन जाता है। वह उसे कला के क्षेत्र में प्रेरित करता है। जब निलिमा इस क्षेत्र में आगे बढ़ जाती है, वह अपना स्वयं का व्यक्तित्व प्रप्त कर लेती है। तब हरबंस उसकी यह उपलब्धि सह नही पाता। इसीलिए दोनों में किसी–न–किसी बात को लेकर द्वन्द उत्पन्न होता है। 'अंधेरे बंद कमरे' में सुषमा श्रीवास्तव आर्थिक रूप से स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है और इसीलिए उसने पत्रकारिता का जीवन अपनाया है। वह किसी भी पुरुष के सामने अपने को हीन नही होने देना चाहती है और न ही किसी के शासन में बंध कर रहना चाहती थी। ''मैं आर्थिक रूप से किसी पर निर्भर नहीं रहना चाहती थी, इसलिए मैंने आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त की। अकेली रहना और खुद अपने लिए कमाना सीखा। पुरुषों में स्त्रियों के प्रति जो संरक्षणात्मक भाव रहता है, वह मुझे बरदाश्त सिद्ध कर सकूँ।''[12]

'न आनेवाला कल' उपन्यास में मनोज और शोभा विवाहित जीवन की असफलता का एक बड़ा कारण दोनों का व्यक्तिवादी होना है। मनोज एक पहाड़ी स्कूल में कार्यरत है। वहाँ का वातावरण और नियम इस तरह के है कि व्यक्ति घुटन महसूस करता है लेकिन शोभा उस वातावरण में समझौता नहीं कर पाती और जाने का फैसला कर लेती है शोभा कहती है– ''यहाँ की सब चीजें बहुत अजीब है, यहाँ के लोग, यहाँ के रंग– ढ़ंग सभी बहुत अजीब है। मुझे तो लगता है कि मै इसी तरह यहाँ रहती रही, तो जल्दी ही पागल हो जाऊँगी।''[13]

इस उपन्यास में सभी पात्र लगभग इसी तरह का घुटन महसूस करता है। जैसे– 'बानी' का भी व्यक्तित्व इसी प्रकार का है। किसी पुरुष के सामने वह झुकना नहीं चाहती है वो स्वतंत्र जीना चाहती है। वह कहती है– ''मै इसे एक विशेष परिस्थिति में रो पड़ने जैसी ही कमजोरी समझती हूँ जो कि मेरी सम्मान भावना को ठेस पहुँचाती है। ऐसी कमजोरी अपने में देखकर मैं अपने को बहुत छोटी महसूस करती हूँ। मैं नही चाहती कि किसी भी आदमी का मुझ पर इतना अधिकार हो कि मैं उनके बिना जी ही न सकूँ।''[14] राकेश जी ने इस उपन्यास में आधुनिक जीवन के अकेलेपन का सुन्दर चित्रण किया है। इसमें सभी पात्र थोड़ी–थोड़ी देर के लिए आते है और जीवन के प्रति उदासी और उब व्यक्त करते है।

इसीप्रकार, राकेश जी का 'अन्तराल' उपन्यास भी यथार्थ रूप से आधुनिक मानवी संबंध की कहानी है। देव का चरित्र व्यक्तिवादी है। सीमा एक आधुनिक युग की लड़की है। वो टेलीफोन ऑफिस में नौकरी करती है। श्यामा स्वतः आर्थिक रूप में आत्मनिर्भर है। उसके पति की मृत्यु के बाद वह मंडी के हाईस्कूल में हेडमिस्ट्रेस है। सीमा कहती है– ''मै इस वक्त तुम्हें बताकर जा रही हूँ कि रात को मुझे लौटने मे देर हो जाएगी। खाना मैं घर पर नहीं खाऊँगी। लौटने पर कल रात की तरह मुझे परेशान मत करना।''[15]

तथा देव को भी अपनी पत्नी श्यामा और परिवार के प्रति लगाव नहीं है। रात को वो भी बहुत देर से घर आता है। खाना लिए श्यामा इंतजार करती है। देव ने थाली देखकर पूछ लिया था, अभी तक भूखी बैठी हो तुम? मैने सोचा देर हो गई है, खा लिया होगा तुमने।''[16] इन संबंधों का विश्लेषण करते हुए आधुनिक समाज के नायक–नायिकाओं की समस्या अपने प्रमुख पात्रों द्वारा प्रतिकात्मक रूप से उठाई है। यह उपन्यास पारिवारिक संघर्षो की गाथा भी है और निजी संबंधों के साथ भौतिक आवश्यकता पर टिके संबंधों का उल्लेख भी हुआ है।

कुमार का पीली साड़ी वाली लड़की लता के साथ भौतिक संबंध है। लता द्वारा रिक्त हुआ पर वह श्यामा से भरना चाहता है। इसके अतिरिक्त भौतिक संबंध सीमा का भी था। वह अविवाहित होने पर भी पुरुष मित्रों से संबंध रखती है। ''अंतराल मूलतः स्त्री–पुरुष संबंधों का ही उपन्यास है। मोहन राकेश ने अति आधुनिक समस्याओं को लेकर ही 'अंतराल' लिखा है। इसमें आधुनिक युग का बोध होता है। समाज के बदलते मूल्यों का चित्रण हुआ है।''[17]

अर्थात् सामाजिक चेतना शब्द का अर्थ मात्र सामाजिक जागृति ही नही, वरन् प्रत्येक मानवीय समस्या पर सामूहिक दृष्टि से विचार करना है। समस्त सामाजिक विषमताओं से सम्बंधित नगरीय जीवन की समानतामूलक भावना ही सामजिक चेतना है।

निष्कर्ष

राजेन्द्र यादव और मोहन राकेश के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय परिवेश की यथार्थता और मार्मिकता प्रसंशनीय है तथा सभी पात्र नाना समस्याओं को झेलते हुए और साधनाभाव से पीड़ित होकर भी महत्त्वाकांक्षा से प्रेरित होकर संघर्ष करते हुए, यहाँ मध्यवर्गीय आगे बढ़ता है। उस वर्ग की समस्याओं व अभावों को उन्होंने सहानुभूति के साथ रखने का प्रयत्न किया है।

अतः हम यह कह सकते है कि दोनों उपन्यासकारों के उपन्यास में मध्यमवर्गीय, नगरीय परिस्थिति में मानवीय संबंध मात्र औपचारिक बनकर रह गए है। दाम्पत्य जीवन के रंग फीके पड़ रहे हैं और इनकी जिजीविषा तीव्र स्थिति में रहकर भी भ्रमित हो गई है तथा महानगरीय बोध, संबंधों की लड़ाइयाँ, टूटती आस्था, अर्थ, यौन, कुण्ठा, अस्मिता की लड़ाई जैसे सभी मुद्दों को लेकर उपन्यासों में सजीवता लाने का प्रयास किया है।

साहित्य समष्टिगत चेतना की उपज होने के कारण साहित्य और समाज का घनिष्ट सम्बन्ध रहता है। साहित्य के लिए आवश्यक सामग्री युग और समाज प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

1. राजेन्द्र यादव 'शह और मात'
2. हिन्दी उपन्यास उपलब्धियाँ, लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय, पृष्ठ 11
3. कथाकार राजेन्द्र यादव, डॉ० चन्द्रभानु सोनवर्णे, पृष्ठ 90
4. नागार्जुन की सामाजिक चेतना, प्रो० प्रणय, पृष्ठ 31
5. डॉ० शरेशचन्द्र चुलकीमठ, मोहन राकेश का साहित्य समग्र मुल्यांकन, पृष्ठ 38
6. राजेन्द्र यादव, सारा आकाश, पृष्ठ 15
7. डॉ० अर्जुन चव्हाण, उपन्यासकार राजेन्द्र यादव, पृष्ठ 61

8. राजेन्द्र यादव, 'अनदेखे अनजान पूल' पृष्ठ 206
9. राजेन्द्र यादव, 'मंत्रविद्ध' पृष्ठ 42
10. मनोविज्ञान परिभाषा कोश, एस. के. मुखर्जी, पृष्ठ 88
11. राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में सामाजिक चेतना, डॉ० परमजीत एस० पृष्ठ 69
12. मोहन राकेश, 'अंधेरे बंद कमरे' पृष्ठ 382
13. वही, 'न आनेवाला कल', पृष्ठ 16
14. वही पृष्ठ 137
15. मोहन राकेश, अंतराल, पृष्ठ 164
16. मोहन राकेश का साहित्य परिवारिक संबंधों के विघटन की स्थितियाँ, डॉ० श्रीमती सुनिता श्रीमाल, पृष्ठ 92
17. मोहन राकेश की कहानियों में आधुनिकता प्रो० मुजावर, पृष्ठ 21